(6) नभोऽङ्गिरोमनुषांवत्युपसंख्यानाम्– लौकिक संस्कृत नभोवत् के स्थान पर वे में नभस्वत्, अङ्गिरोवत् के स्थान पर अङ्गिरस्वत्, तथा मनुष्योवत् के स्थान पर वेद में मनुषवत् रूप उपलब्ध होते हैं ।

(7) यजेश्चकरणे– वेद में यज् धातु के योग में षष्ठी विभक्ति का विकल्प से प्रयोग होता है । यथा घृतस्य यजते अथवा घृतेन यजते ।

(8) नेतरात् छन्दसि– वेद में इतरत् के स्थान पर इतरम् रूप मिलता है । यथा– वत्रिध्नमितरम् । लेकिन लौकिक संस्कृत में इतरत् काष्ठम् रूप प्राप्त होता है ।

(9) सुपां सुलुक् पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजाल :– वैदिक भाषा में सुपों के स्थान पर निम्नलिखित आदेश होते हैं–

(i) सु– (सुपों को सु हो जाता है) प्रथमा विभक्ति का सु प्रत्यय किसी भी अन्य सुपों के स्थान पर प्रयुक्त हो जाता है । यथा– वेद में पन्थाः लौकिक संस्कृत में पन्थानः ।

(ii) लुक्– किसी भी सुप् का लुक् (लोप) हो जाता है । यथा– वेद में व्योमन् लौकिक संस्कृत में व्योमनि (सप्तमी एक वचन)

(iii) पूर्वसवर्ण– पहले वाले वर्ण के सवर्ण रूप को रख लिया जाता है । यथा– लौकिक संस्कृत में तृतीया विभक्ति एक वचन में धीति शब्द का धीत्या रूप बनता है । परन्तु वेद में धीत्या के स्थान पर धीती रूप भी मिलता है । मत्या के स्थान पर मती रूप प्राप्त होता है (तृतीया विभक्ति एक वचन)

(iv) आत्– (आ+आत्) प्रथमा विभक्ति द्विवचन और द्वितीया विभक्ति द्विवचन (औ) में औ के स्थान पर वेद में आ हो जाता है यथा– सुरथौ के स्थान पर वेद में सुरथा प्रयोग मिलता है ।)

आत्– वेद में द्वितीया विभक्ति अम् के स्थान पर आत् हो जाता है । यथा नतम् के स्थान पर वेद में नतात् रूप प्राप्त होता है ।

(v) शे– वेद में सुप् (सप्तमी विभक्ति बहुवचन) म्यस् (चतुर्थी बहु वचन) के स्थान पर 'शे' प्रत्यय का प्रयोग होता है । 'युष्मासु' के स्थान पर वेद में 'युष्मे' तथा 'अस्मभ्यम्' के स्थान पर वेद में 'अस्मे' रूप प्राप्त होते हैं ।

Scanned with CamScanner